



[21वीं सदी में गांधीवादी मूल्यों का वैश्विक अवलोकन]

राज धारी यादव (असिस्टेंट प्रोफेसर)

राजकीय पी.जी. कॉलेज फतेहाबाद

आगरा

Email: yadavraj661@gmail.com

सार:-

भारत की आजादी के महानायक महात्मा गांधी का यश और कीर्ति सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं रही। बल्कि उनका वैश्विक प्रभाव इस तरह स्थापित हुआ कि दुनिया के सभी देश सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर शोषण अन्याय को खत्म कर मानवता की नींव रखने का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समय गांधी जी द्वारा जिन सिद्धांतों का प्रयोग किया गया। उसे विश्व के कई देशों ने ढाल के रूप में अपनाया और अपने देश में नागरिक अधिकार के लिए संघर्ष किया अमेरिका में अश्वेत आंदोलन दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद और तिब्बत में सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अधिकार के लिए किया गया आंदोलन प्रमुख हैं। गांधीजी ने सत्य को सीधा ईश्वर से जोड़ा तो अहिंसा को दुर्बल का नहीं बल्कि सबल का प्रमुख हथियार बताया। लोगों को इन्हीं दोनों रास्ते पर चलकर दमनकारी अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेंकने के लिए प्रेरित किया। सत्याग्रह को सत्य के प्रति आग्रह का माध्यम कहा जिसको संवैधानिक तरीके से भूख हड़ताल और धरना प्रदर्शन के द्वारा देश की आजादी का जो रास्ता अख्तियार किया वो एक दिन अंग्रेजों के ताबूत में कील साबित हुई। उनके स्वदेशी आत्मनिर्भर सर्वोदय जिसके माध्यम से लोगों में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देना हर व्यक्ति को काम मिलना और बिना किसी भेदभाव के सभी का उत्थान हो कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के हिमायती थे। जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपने घर बैठ कर काम कर सके किसी को काम का अभाव न हो इसीलिए गांधी जी ने चरखा चलाया और देश के हर घर में चरखा चलाने उससे बने सूत के कपड़े पहनने के लिए प्रेरित किया। सभी धर्मों को एक ही बगीचे का फूल कहा। जो आज विश्व में धर्म के नाम पर लड़ाई हो रही है और सांप्रदायिकता की जलती आग में जनमानस को धकेल कर सत्ता पर काबिज लोग सौहार्द बिगाड़ने के साथ नवजवानों के खून से होली खेल रहे हैं। और सांप्रदायिक आधार पर सिमी आईएसआई जैसे विश्व शांति और सद्भाव खराब करने वाले संगठन पनप रहे हैं।

मुख्यशब्द:- सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, ट्रस्टीशिप, सर्वोदय एवं अन्त्योदय समतामूलक समाज, वैश्वीकरण।

Received	Accepted	Published	Article Type
05/08/2026	20/09/2026	25/09/2026	Research Paper



परिचय: - महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता के प्रणेता ही नहीं बल्कि वैश्विक चेतना के अग्रदूत थे। आज विश्व वैश्विक अशांति जलवायु परिवर्तन पर्यावरण संरक्षण जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। तो इन परिस्थितियों में ध्यान गांधीवादी आदर्शों की तरफ जाना स्वाभाविक है। क्योंकि गांधी ने जिस विश्व बंधुत्व बसुधैव कुटुंबकम् का विचार दिया जो यह दर्शाता है कि पूरे विश्व के लोग भाईचारे को अपनाए विश्व का कल्याण ही मानव जाति का लक्ष्य होना चाहिए अब आपस में मिल जुल के रहे कोई किसी के साथ वैमनस्य भाव न रखे एक दूसरे का सहयोग करे तभी विश्व में शांति स्थापित होगी। आज के भौतिकवादी संसार में हर कोई क्षणिक सुख के लिए भौतिकतावादी होता जा रहा है। और विश्व से नैतिक मूल्यों का हास हो रहा है। विश्व से इन बुराइयों को खत्म करने के लिए गांधीवादी मूल्यों को अपनाना होगा।

शांति- सद्भाव, अहिंसा : - विश्व में मानव जाति के प्रति करुणा एवं अहिंसा का भाव रखना चाहिए। बात बात पर लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए यदि कोई व्यक्ति आपके एक गाल पर मारे तो दूसरा गाल भी उसकी तरफ कर देना चाहिए जिससे उसको संतुष्टि प्राप्त होती है। लेकिन इतनी छोटी सी बात को लेकर लड़ना नहीं चाहिए क्योंकि उससे दोनों पक्षों की बर्बादी होगी। समाज में सद्भाव स्थापित करना विश्व के हर नागरिक की जिम्मेदारी होती है गांधीजी इसको पवित्र साधन बताया और देश को आजादी दिलाने के लिए हमेशा अहिंसा का पालन किया हिंसा से दूर रहे जब पहला जन आंदोलन चलाया तो वह चौरी चौरा घटना की वजह से हिंसक हो गया तो उन्होंने तुरंत वापस ले लिया। इसका कई नेताओं ने विरोध भी किया लेकिन उन्होंने अपने आदर्शों से कोई समझौता नहीं किया। और पूरे आंदोलन को इसी रास्ते पर आगे बढ़ाया। इसीलिए गांधीजी को कई अन्य देश के नेता विश्व शांति का अग्रदूत कहते हैं। अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने इन्हीं आदर्शों पर चलकर नागरिक अधिकार आंदोलन चलाया और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने गांधीवादी मूल्यों को आत्मसात कर वहां पर रंग भेदी के विरुद्ध संघर्ष किया गांधीजी को इस तरीके के संघर्ष प्रयोग का मार्गदर्शक बताया। तिब्बती धर्म गुरु दलाईलामा ने गांधीजी को अपना गुरु कहा और उनके सिद्धांतों का अनुसरण करके वहां पर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सुधार के लिए संघर्ष किया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा गांधी जयंती 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया गया। और संयुक्त राष्ट्र द्वारा गांधी जी के विचारों को अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सद्भाव के रूप में प्रसारित किया गया।

जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण संरक्षण- भौतिकवादी युग में व्यक्ति हरे वृक्षों को काट रहा है जिससे पृथ्वी पर मौजूद समस्त जीवों को इसका खामियाजा उठाना पड़ रहा है प्राकृतिक संसाधन वन्य जीव इत्यादि का विनाश हो रहा है। कहीं अकाल तो कहीं बाढ़ जैसी समस्या पैदा हो रही है जिससे किसान को खेती का नुकसान हो रहा है। और प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो रही है। जिसका सीधा असर वायु जल पर पड़ रहा है जिससे मानव और अन्य जीव जंतुओं में तमाम तरह की बीमारियां पैदा हो रही हैं। गांधीजी पर्यावरण संरक्षण के हिमायती थे इनसे प्रेरित होकर इसके संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए गए।

आर्थिक विचार: सर्वोदय एवं अन्त्योदय:- उनका मानना था कि समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जाए। क्योंकि जब तक संपूर्ण मानव जाति का विकास नहीं होगा तब तक राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता इसीलिए सर्वोदय सब का उदय अभियान चलाया और वंचित तबके को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए सबका पेट भरने के लिए अमीर और गरीब की खाई को पाटने के लिए चेतना पैदा की। उनका मानना था कि भारत गांवों का देश है जब तक गांव विकसित नहीं होंगे तब तक भारत विकसित भी नहीं हो सकता भूमिहीन कृषकों भूमि दिलाने के लिए बिनोबा भावे के साथ मिलकर भूमि दान कार्यक्रम में भाग लिया और छोटे छोटे कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बल दिया जिससे हर घर में



हर व्यक्ति को रोजगार मिल सके चरखा से बने सूत के खादी वस्त्र पहनने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी बड़े उद्योगों के विरोधी नहीं थे क्योंकि उनको पता था कि हर वस्तु कुटीर उद्योग से नहीं तैयार हो सकती लेकिन बेरोजगारी को कम करने के लिए छोटे उद्योग लगाने जरूरी हैं। भारत सहित विश्व के अधिकांश देश कृषि प्रधान हैं। जहां रचनात्मक बेरोजगारी अधिक है ऐसे में उनकी महत्ता है। इसके जरिए स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा। वे अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरोधी थे। इसीलिए उनके द्वारा बनाए गए कानूनों अदालतों स्कूलों और उद्योग का विरोध किया और स्वदेशी अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन आज के युग में देखा जाए तो विश्व में आर्थिक असमानता इस तरह फैल रही है कि अमीर और अमीर होता जा रहा है जबकि गरीब और गरीब होता जा रहा है। जो मानव समाज के लिए नासूर बनता चला जा रहा है। इस भयावह स्थिति से बाहर निकलने के लिए गांधीवादी विचार विश्व के लिए समीचीन प्रतीत होते हैं। जिससे सर्व समाज के बीच बनती इस खाई को पाटा जा सके। इनके सर्वोदय और अंत्योदय के सिद्धांत ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय विनोबाभाबे जैसे लोगों को खूब प्रभावित किया था और विश्व को इस विचारों से सीख लेने आवश्यकता है।

समतामूलक समाज : - गांधीजी समतामूलक समाज की स्थापना करने पर जोर दिया जिसमें समाज के हर वर्ग का उत्थान हो सके। उन्होंने छुआछुत जात पात का विरोध किया और जिनको सदियों से अछूता माना जाता था जिनको स्वर्ण समाज के लोग छूने से परहेज करते थे। उनको हरिजन अर्थात् भगवान के लोग कहा और उनको धन धरती राजपाठ में हिस्सेदारी देने की हिमायत की। इस तरह की कुरीतियों के समूल नष्ट करने का आह्वान किया। और डॉक्टर बी आर अंबेडकर के साथ पूना पैक्ट करके उनकी राजनीति में भागीदारी सुनिश्चित की। यही से उन्होंने हरिजनों के उद्धार पर विशेष काम किया। और हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। और अंग्रेजों के फूट डालो की नीति को असफल किया। वे लैंगिक समानता के प्रबल समर्थक थे। नारी को अबला से सबला बनाने की दिशा में काम किया। और उनको चहारदीवारी से बाहर निकलने हर कम में भागीदारी सुनिश्चित करने स्त्री पुरुष के बीच की खाई को कम करने सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयास किया जिसका परिणाम आज विश्व के सामने दिखाई दे रहा है। हर क्षेत्र में महिलाएं बाद चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं अपनी विजय पताका फहरा रही हैं। गांधी जी ने शोषित वंचित दुर्बल असहाय वृद्ध बिकलांग हर जरूरतमंद तबके को हक अधिकार सहायता देने के लिए आवाज उठाई। और उनके विचार को आदर्श मानकर आज कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन हो रहा है। वे स्वच्छता के सजग प्रहरी थे जिस पर विशेष ध्यान देते थे और कहते थे स्वच्छता मानव जीवन का परम ध्येय होना चाहिए। जिससे मनुष्य तन और मन दोनों खुश रहता है। और यही से प्रेरणा लेकर स्वच्छता अभियान कार्यक्रम उनकी जयंती पर शुरू किया गया। और पूरे मानव जाति को इस मुहिम से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया।

वे राष्ट्र निर्माता के साथ साथ युग निर्माता और दूरदृष्टा भी थे। उनके द्वारा किए गए कार्य आज के इस बदलते परिवेश में भी स्पष्ट और मौलिक सिद्ध हो रहे हैं। अपने जीवन में उपनिषद् गीता जैन धर्म के पांच महाव्रत से बहुत प्रभावित थे। इन ग्रंथों से जो सीख प्राप्त की उसको जीवन में आत्मसात किया और कर्मयोगी की तरह विश्व को वह संदेश दिया। कि यदि मनुष्य में साहस और संघर्ष की चेतना है तो किसी भी असंभव काम को संभव बनाया जा सकता है। उन्होंने निडर होकर जिस वीरता और साहस का परिचय राष्ट्रीय आंदोलन में दिया अपने सिद्धांतों पर अडिग रहकर तमाम विरोध झेलने के बाद भी सत्य अहिंसा सत्याग्रह के मार्ग पर चलकर असंभव से लगने वाले कार्य को संभव बनाया जिसके चलते विरोधी भी उनके प्रशंसक बन गए। तथा भारतीय समाज को पूरी तरह से बदलने का बीड़ा उठाया समाज को दीमक की तरह नष्ट करने वाली सभी बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई जिस संगठन के साथ काम करके भारत को मुक्ति दिलाई एहसास होने पर उसको भी समाप्त करने की बात की। और खुद भी कांग्रेस को छोड़ दिये। वे स्वराज्य विकेंद्रीकरण के पक्षधर थे। ग्राम स्वराज्य को बढ़ावा



देने पर जोर था जब तक गांव के लोगों को शासन में भागीदारी नहीं मिलेगी गांव के लोगों की स्थिति में सुधार नहीं होगा। इसीलिए ग्राम पंचायत के गठन की बात की। जिसके जरिये गांव का विकास होगा ग्रामीण उद्योगों की स्थापना होगी। अगर सत्ता का केन्द्रीकरण होगा यदि सत्ता निरंकुश होगी तो देश के सभी वर्ग की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पाएगी। इसलिए शक्तियों का विभाजन आवश्यक है। वे राजनीति को धर्म से जोड़कर देखते थे और राजनीति का उद्देश्य सबको समान भाव से देखना सबके साथ न्याय करना ही सर्वोपरि धर्म मानते थे। उनका कहना था हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई सब एक ही ईश्वर की संतान हैं। और सारे धर्म के रास्ते अलग हैं लेकिन मंजिल सबकी एक है। धर्म ग्रंथों को पवित्र मानते थे। और सर्वधर्म समभाव की बात करते थे। विश्व बन्धुत्व और वैश्विक शांति के लिए आवश्यक है कि सबके भीतर प्रेम दया करुणा भाव जागृत करना एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म का आदर करें उनके धार्मिक कार्यों में सहयोग करें। गांधीजी दार्शनिक अराजकतावादी थे। वे राज्य को आवश्यक बुराई मानते थे क्योंकि राज्य में वर्ग विभाजन का सिद्धांत पाया जाता है जिसमें अमीर वर्ग गरीबों का शोषण करता है इसीलिए वे आदर्श राज्य और रामराज्य की परिकल्पना की। जिसमें किसी के साथ अन्याय न हो सके और सबको एक नजर से देखा जाए समान व्यवहार किया जाए। अमीर वर्ग खुद को संपत्ति का स्वामी न माने बल्कि ट्रस्टी माने और सर्व समाज की सेवा में अपना सहयोग करें। पुलिस अपराधी को दंड देकर उनमें सुधार करें किंतु भले इंसान को परेशान न करें और समाज की सेवा करें किसी प्रकार की अनैतिक घटना होने से रोके लोगों को सुरक्षा प्रदान करें। जेल को सुधारात्मक कार्य करने चाहिए कैदी को पुनः अपराध करने से रोके और भरण पोषण के लिए कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करें। अदालतों को सर्वसुलभ और निःशुल्क न्याय उपलब्ध कराने चाहिए जिसके गरीब भी पैसे के अभाव में न्याय से वंचित न रहने पाएं। और सबके साथ समान रूप में न्याय हो। गरीब अमीर राजा प्रजा में कोई भेदभाव न हो। गांधी का वर्गबिहीन राज्य का सिद्धांत मार्क्स से काफी भिन्न है।

गांधीजी स्वतंत्रता आंदोलन में हवा के तेज झोंके के रूप में प्रवेश किए और अपने बल पर हवा का पूरा रुख ही बदलकर रख दिया। चंपारण में किसानों के साथ जो अन्याय हो रहा था उससे राजकुमार शुक्ल ने अवगत कराया और बिना किसी रणनीति के आनन फानन में वहाँ पहुँचे और उनकी मांग को मनवा ली फिर मजदूरों की मांग भी पूरी करवाई उसके बाद ठोस रणनीति के साथ पहला जन आंदोलन चलाने का निश्चय किया। वे सच्चे सिद्धांतवादी थे। कितनी भी यातनाएं झेली किंतु अपने सिद्धांतों से कोई समझौता नहीं किया। असहयोग आंदोलन वापस लेने पर तमाम बुराइयां सही और कांग्रेस को टूटने से बचाने के लिए 1924 में बेलगांव में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता भी की। और उसके बाद दांडी मार्च के जरिए नमक कानून तोड़ कर असहयोग आंदोलन चलाया गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया लेकिन बात न बनने पर फिर से आंदोलन किया कई बार जेल गए सत्रह बार भूख हड़ताल की। अंततः भारत छोड़ो आंदोलन के जरिए आजादी का मार्ग प्रशस्त किया। और कांग्रेस समाप्त करने की इच्छा जताई। विभाजन को हरगिज मानने को तैयार नहीं थे फिर उसके बाद जो परिस्थिति उत्पन्न हुई उस पर चिंता जाहिर की। वे राजनीति को देश के लिए उपयुक्त नहीं मानते थे। मनुष्य की सेवा को सर्वोपरि स्थान देते थे। विश्व में आज युद्ध बम आतंकवाद एक तरफ पैर पसारें हैं। तो दूसरी तरफ जलवायु संकट का खतरा मंडरा रहा है और मानव बेरोजगार और अकेलापन महसूस कर रहा है तो ऐसे में आज से सदियों पूर्व गांधीजी द्वारा जो परिकल्पना की गई थी उसके सिवाय और दूसरा कोई रास्ता नहीं दिखाई देता जो मनुष्य को इन संकटों से उबारने में सफल हो सके। उनका कहना था प्रकृति के पास मनुष्य के उपभोग के पर्याप्त संसाधन हैं किन्तु उसकी लालच को पूरी नहीं की जा सकती। आज का मानव अपनी लालच को पूरा करने के लिए दानव बनता जा रहा है यही कारण है कि जगत में त्राहि त्राहि मची है। ऐसे में यदि मानव जाति को बचाना है तो इस डिजिटल दुनिया से इतर गांधीवादी मूल्यों को आत्मसात करना होगा परोपकार करुणा दया को अपनाना होगा



। गांधीजी का मानना था कि किसी देश की सामाजिक नैतिक और आर्थिक प्रगति अंततः शिक्षा पर निर्भर करती है। उनकी राय में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्म मूल्यांकन छात्र के लिए चरित्र निर्माण सबसे महत्वपूर्ण है। स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को शामिल करने पर बल दिया। शिक्षा संबंधी विचार वर्धा योजना के नाम से जानते हैं। जो आदर्श नागरिक स्वावलंबी और सर्वांगीण विकास के लक्ष्य पर केंद्रित थी। गांधीजी ने अपना कोई मौलिक चिंतन प्रस्तुत नहीं किया। बल्कि आवश्यकता के अनुरूप भारतीय दार्शनिक परम्परा का नवीनीकरण अवश्य किया हिन्दू धर्म से आश्रम व्यवस्था रामायण से राम राज्य बौद्ध धर्म से मध्यम मार्ग और हृदय परिवर्तन की अवधारणा जैन से अहिंसा ब्रह्मचर्य और प्राणिमात्र के प्रति करुणा जैसे नैतिक मूल्यों को ग्रहण किया उनके लिए धर्म नैतिकता की विषयवस्तु है। कर्मकांड का साधन भर नहीं वे नैतिकतावादी दार्शनिक थे। जिन्होंने थोरो द्वारा दिए गए शांतिपूर्ण विरोध के सिद्धांत में सत्य अहिंसा जोड़कर सत्याग्रह की नवीन अवधारणा देकर इस नैतिक दर्शन को लोकप्रिय स्वरूप प्रदान किया। वे नर की सेवा को नारायण की सेवा से जोड़कर देखते थे। वे कहा करते थे अपने आप को खोजने का सबसे सही तरीका है। खुद को दूसरों की सेवा में लीन कर देना साधन और साध्य की पवित्रता पर बल दिया इस अवधारण के अनुसार साधन बीज है और साध्य वृक्ष। इसलिए दोनों की पवित्रता पर बल देते हुए उन्होंने साधन की पवित्रता पर ज्यादा बल दिया। वे क्षमा को महत्वपूर्ण मानवीय गुण मानते थे। आँख के बदले आँख लेने की जिद अंततः दुनिया को अंधा बना देगी । इसलिए पाप से घृणा करो पापी से नहीं। उनकी कथनी और करनी में कोई भेद नहीं था। स्वराज्य की अवधारणा अति व्यापक थी। जो उन्हें अपनी स्वतंत्र चेतना अर्थात् अंतरात्मा द्वारा शासित होने संबंधित थी। किसी बाह्य शक्ति आदेश पर नहीं उन्होंने रामराज्य के माध्यम से जो लोक कल्याणकारी राज्य का खाका तैयार किया वह भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्व में मूर्त रूप में दिखायी पड़ता है। राज्य समाज के कमजोर वर्गों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान की दिशा में कार्य करेगा और नशीले पेय पदार्थों के सेवन पर प्रतिबंध लगाएगा जो स्वस्थ के लिए हानिकारक है। वे मातृभाषा के प्रबल समर्थक थे। और स्कूली शिक्षा मातृभाषा में होने की वकालत की । वे न सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र में विलक्षण कार्य किए बल्कि विश्व के राजनीतिक चिंतन में बड़ी क्रांतिकारी और मौलिक देन बन कर उभरे। मध्ययुग में धर्म ने राजनीति पर नियंत्रण कर समाज का बहुत अहित किया इसलिए धर्म निरपेक्ष राजनीति का विचार अस्तित्व में आया। किंतु गांधीजी का मानना था कि धर्म से पृथक राजनीति कूड़े के समान है। इसीलिए वे भगवान को सत्य के रूप में उल्लिखित किया उनका मानना था कि मैं लकीर का फकीर नहीं हूँ। वे स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी महत्वपूर्ण मानते थे जिसको नियमित जीवन में अपनाना पड़ेगा तभी कल्याण होगा।

निष्कर्ष : - महात्मा गांधी ने कहा मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। जो एक दिन पूरे विश्व के लिए संदेश बन जाएगा। आइंस्टीन ने कहा आने वाली पीढ़ी कभी याद करेगी लाठी लेकर धोती पहनकर चलने वाला हर नामुमकिन कार्य को मुमकिन बनाने की कला वाला कोई महापुरुष दुनिया में था। वह विश्व के मानव समुदाय के पथ प्रदर्शक थे उन्होंने असीमित संसाधनों के साथ सत्य और अहिंसा को ढाल बनाकर सर्व सम्पन्न अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने के साथ ही अन्याय अत्याचार शोषण दमन के खिलाफ जो आवाज उठाई वो मानव जाति के लिए मील का पत्थर बन गया। उन्होंने विश्व शांति और सद्भाव की जो लकीर खींची उसका अनुसरण कर विश्व के कई राजनेताओं और समाज सुधारकों ने अपने देश की बुराई को समाप्त करने के लिए संघर्ष किया और चेतना का सृजन किया। इक्कीसवीं सदी में गांधी जी की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। जब नैतिक शिक्षा का पतन हो रहा है और भौतिक शिक्षा को बढ़ावा मिल रहा है। लोगो में सौहार्द्र भाईचारा मेल मिलाप खत्म हो रहा है। मनुष्य बर्बर पशु की तरह बर्ताव कर रहा है। जल जंगल जमीन नष्ट हो रहे हैं। पर्यावरण पर संकट मंडरा रहे हैं। खुले आसमान के नीचे शुद्ध हवा में सांस लेना तक मुश्किल हो गया है। और अकेलापन इस कदर पैर पसार रहा है । कि लोग आए दिन जिंदगी



के साथ गलत फैसले ले रहे हैं। ऐसे में यदि विश्व शांति चाहता है। तो गांधीवादी आदर्शों को पूरी लगन के साथ संपूर्ण मानवजाति को अपनाना होगा तभी विश्व इन बुराइयों से मुक्त होगा। उन्होंने कहा था कि गांधी मर सकता हैं। लेकिन गांधीवाद नहीं। अर्थात् गांधी एक हाड़ मांस का बना जीव है उसकी मृत्यु एक दिन अवश्य होगी लेकिन उसके द्वारा कार्य हमेशा अमर रहेगा। उनका मानना था विश्व गुरु हथियार से नहीं अपितु विचार से बना जाता है। क्योंकि हथियार दुनिया को तबाह करता है। और विचार जनमानस को सीख देता है।

सन्दर्भ : -

1. गाँधी, मोहनदास करमचंद - सत्य के प्रयोग (आत्मकथा)(नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1927)
2. गाँधी, मोहनदास करमचंद - हिंद स्वराज्य, (नव जीवन प्रकाशन, 1909)
3. कृपलानी, जे .बी. - गांधी: उनका जीवन और विचार (नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1968)
4. धर्मपाल - गांधी का भारत और भारत का गांधी (पुनरुत्थान ट्रस्ट, 2010)
5. मशरूवाला, किशोरलाल - गांधी विचार दोहन (नवजीवन , अहमदाबाद)
6. प्रसाद, निर्मल - गांधी दर्शन (राधा पब्लिकेशन , नई दिल्ली, 2015)
7. गुहा, रामचंद्र - गाँधी बीफोर इंडिया (पेंगुइन, 2018)
8. वेबर, थॉमस- गांधी एज डिस्कपल एंड मेंटर (केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004)
9. यूनेस्को - गांधी एंड द कंटेंपरेरी वर्ल्ड (यूनेस्को पब्लिकेशन , 1969)
10. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी (CWMG)-100 Volumes (पब्लिकेशन डिवीजन , गवर्नमेंट ऑफ इंडिया)
11. यूनाइटेड नेशन्स - इनटरनेशनल डे ऑफ नॉन - वायलेंस रेजोल्यूशन (यू एन रेजोल्यूशन , 2007)
12. द हिंदू - महात्मा गांधी की प्रासंगिकता (7 दिसंबर 2010)